सूरज सुजान

सूरजमल स्मारक शिक्षा-संस्था (रजि.) नई दिल्ली द्वारा स्थापित

सम्पादक : जयपाल विद्यालंकार, महाराजा सूरजमल संस्थान, सी-4, जनकपुरी, नई दिल्ली-58
फोन 011-25552667, 25528117, फैक्स 011-25528116, ईमेल: surajsujan@gmail.com
वेबसाइट - http://www.surajmalmemorialeducationsociety.org

मासिक पत्रिका वर्ष 43 अंक 8 मई 2020

Come, Join, Acquire wings & fly

Campus - OXFORD University

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों के अपने विचार है। प्रकाशक, मुद्रक, संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं।

संपादकीय

ऑनलाइन अध्यापन

जयपाल विद्यालंकार–9810256995

गति जीवन का पर्याय है। परिवर्तन गति की पहचान है। समाज में समय के साथ–साथ स्वाभाविक परिवर्तन होता रहता है। पहले व्यक्ति पैदल चलकर एक जगह से दूसरी जगह जाता था। आज हवाई जहाज सात–आठ सौ व्यक्तियों को लेकर आकाशमार्ग से हजारों मील की यात्रा कुछ घण्टों में पूरी कर लेता है। एक दौर वह भी था जब मोटर गाडी का आविष्कार हुआ, तब लंदन में मोटर चलाने से दो–तीन दिन पहले सूचितकरना होता था कि फलां दिन फलां समय मैं अमुक मार्ग पर मोटर चलाऊंगा। हॉरन का आविष्कार नहीं हुआ था। दो आदमियों को मोटर के आजू–बाजू पायदान पर खडे रह कर भोंपू बजाना पडता था। चलती मोटर को देखने के लिए लोगों का हुजूम उमड पडता था। गति, यानि जीवन की यह स्वाभाविक रफतार है। इस मन्दगति में किसी बडी, बहुत बडी घटना से जबरदस्त तेजी आती है। बडी घटना यानि आपदा। प्रकृति प्रदत्त आपदा से मोहनजोदडो की समूची सभ्यता समाप्त हुई। द्वतीय विश्वयुद्ध से इंगलैण्ड का वह विस्तरित साम्राज्य धराशायी हो गया जिस के बारे में कहा जाता था कि अंगरेजों के राज्य में सूरज हमेशा चमकता रहता है। विजेता होने पर भी आर्थिक और सैन्य–बल के लिहाज से इंग्लैंड इतना कमजोर हो गया कि उसे लाचारी में अपने आधीन उपनिवेशों को स्वतन्त्र करना पडा। भारत भी उसी झटके में स्वतंत्र हुआ।

कोरोना वायरस जनित कोविड 19 महामारी प्रकृति जनित है या स्वयं मानवप्रदत्त इस विषय में तो बाद में इतिहास में दर्ज होगा। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि यह बडी आपदा है जिसने पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है। इससे कब छुटकारा होगा अभी यह भी निश्चित नहीं है। एक दिन यह समाप्त होगी, या हम इसके साथजीना सीख लेंगे। इससे होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए सभी देश कुछ न कुछ अवश्य करेंगे। इस दिशा में भारत सरकार भी उदासीन होकर तो नहीं बैठी होगी। क्षेत्र अनेक हैं जहां सही समय पर नपा–तुला कदम उठाकर लाभान्वित हुआ जा सकता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा व्यवस्था में ऑनलाइन पर विचार कर रहा है। लॉकडाउन के कारण आजकल इसी पद्धति से पढाई हो रही है। देश की दिशा शासन भले ही तय करे इस के क्रियान्वयन का दायित्वयुवा पीढी पर ही होता है। इस वर्ग के बौद्धिक एवं चारित्रिक व्यक्तित्व का निर्माण शिक्षणालयों में होता है। ऑनकैम्पस और ऑनलाइन से कैसे लाभान्वित हुआ जा सकता है इस संबन्ध में मीमांसा करना बहुत जरूरी है। एक बार शिक्षण–व्यवस्था चल पडी तो दस साल बाद इसके गुण–दोष का पता चलेगा और तब सुधार जरूरी हुआ तो वह बहुत कुछ खो कर ही हो सकेगा।

पढ कर सुन कर या देख कर किसी भी माध्यम से अधीति (जानना), बोध (समझना) और फिर परीक्षा करके यह सुनिश्चित करना कि मैंने जो पढ–सुन कर जाना है उसे समझ कर आत्मसात् कर लिया है। इन चार चरणों से गुजर कर अध्ययन की प्रक्रिया पूरी होती है। प्रथम चरण के लिए विद्यार्थी कक्षा में लैक्चर सुन कर, पुस्तक पढ कर, गूगल यूट्यूब आदि की सहायता से ज्ञान अर्जित करता है। आवश्यक्ता होने पर इन साधनों का फिर से उपयोग करता है। तकनीकी विषयों में प्रयोगशाला का उपयोग और जुड जाता है। विषय को विद्यार्थी ने कितना समझा है अर्थात् वह विषय या संदर्भ आत्मसात् हुआ है या नहीं इसकी जांच सेमेस्टर के समाप्त होने पर परीक्षा के समय ही होती है। वस्तुतः किसी विषय को पढ–सुन कर जानने के बाद उसकीचर्वणा से वह विषय उसका अपना बनता है। मननी चिन्तन, अपने सहपाठियों अध्यापकों के साथ नितन्तर वार्तालाप से होता है। यह प्रक्रिया किसी वरिष्ठ विद्वान के लैक्चर, सेमिनार, बहस, डिबेट, क्विज आदि के माध्यम से हो सकती है। परस्पर बहस क्लासरूम के अतिरिक्त कॉलेज के लॉन, केन्टीन सुविधानुसार कहीं भीहो सकती है। इसके लिए खुलेपन के वातावरण की जरूरत होती है। इस प्रक्रिया में अध्यापक भी साथ हो सकते हैं। विषय का वह संदर्भ जिसे दो–चार दिन पहले क्लास में या अन्य साधनों से पढा, सुना था उसकी चर्वणा की यह प्रक्रिया ही विद्यार्थी में यह आत्मविश्वास पैदा करती हैकि मैंने विषय को पूरी तरह से समझ लिया है। जब यह आत्मविश्वास मजबूत हो जाए तब बारी आती है लेखन की। असल में जब हम किसी विषय पर लिखने बैठते हैं तब पता चलता है कि हमें विषय कितनास्पष्ट हुआ है और अभी कितना और जानने की जरूरत है। इस सारी प्रक्रिया को अभ्यास यानी बारबार उस विषय की आवृत्ति कहा जाता है। यह प्रक्रिया टुकडों में विभाजित पूरे विषय में विद्यार्थी को निपुण बनाती है। तकनीकी विषयों में यही प्रक्रिया लैब की सहायता से होती है। इस समय अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया में मनन, अभ्यास का यह पक्ष नितान्त उपेक्षित है। औपचारिकता के

निर्वाह के रूप में महज खानापूर्ति मात्र होता है। विषय को आत्मसात् करने की इस प्रक्रिया के लिए जिस वातावरण की जरूरत होती है वह महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय से मिलता है।उस वातावरण को जीवन्त बनाए रखने का काम कैम्पस करता है। कुछ इमारतों का परकोटे से घिरा स्थान यह नहीं कर सकता।

हमारे देश में उत्तरमाध्यमिक शिक्षा के बाद के शिक्षणालयों मेंबहुत विविधता है। परम्परागत स्नातक शिक्षा के लिए महाविद्यालय, परास्नातक शिक्षा के लिए भिन्न–भिन्न विभागों से सज्जित विश्वविद्यालय हैं। तकनीकी, प्रबन्धन, वाणिज्य, कॉमर्स, अर्थशास्त्र, कानून, चिकित्सा आदि पाठ्यक्रमों के लिए भिन्न भिन्न संस्थान हैं। उक्त सभी पाठ्यधाराओं में परास्नातक के स्तर के बाद शोध संस्थान हैं। महाविद्यालय,विश्वविद्यालय तथा संस्थान सरकार से साक्षात् या परोक्ष रूप से सहायता प्राप्त तथा जानी–मानी संस्थाओं और उद्योग घरानों द्वारा स्थापित हैं। इनमें अल्पसंख्यक वर्ग संचालित संविधान संरक्षित शिक्षणालय भी शामिल हैं। शिक्षणालयों की गुणवत्ता के नियामक तत्वों में कोई एक कसौटी नहीं बनाई जा सकती। स्तर का तारतम्य संस्थापक, अध्यापक तथा विद्यार्थियों के आधार पर होता है। दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध महाविद्यालयों का समूचा ढांचा समान होने पर भी गुणात्मक तारतम्य विद्यार्थियों के स्तर के कारण भिन्न है। कैंपस के कॉलेज और दूरदराज स्थानों पर कायम कॉलेजों की गुणवत्ता में फर्क स्पष्ट दिखाई देता है। हालांकि इसके अपवाद भी हैं। किसी विश्वविद्यालय को कैंपस का रुतबा तब दिया जा सकता है जब वहां उसके घटक विद्यमान हों। दिल्ली विश्वविद्यालय के कैम्पस का ही उदाहरण लें। नॉर्थ कैम्पस में नौ महाविद्यालय, हाउस, लॉ फैकल्टी, डी स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स, इकोनोमिकग्रोथ तथा विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों के विभाग हैं, लैब हैं। छात्रावास हैं, अध्यापकों के निवास–स्थानहैं। ये सब मिलकर इसे एक कैम्पस का स्वरूप देते हैं। हालांकि इसमें एक खटकने वाली बात इस कैम्पस के बीच आम आवागमन के कई मार्ग हैं। इन्हें बन्द करने का कई बार प्रयास भी हुआ पर वह कामयाब नहीं हो सका। बावजूद इसके पचास–साठ साल पहले तक दिल्ली विश्वविद्यालय का कैम्पस स्वरूप एक हद तक कायम रहा। पहले विद्यार्थी और बाद में यहीं अध्यापक रहते हुए मैंने इसका साक्षात् अनुभव किया है। इस दृष्टि से कुछ अच्छे कॉलेज होने के बावजूद दिल्ली विश्वविद्यालय के साउथ कैम्पस को कैम्पस नहीं कहा जा सकता। महाविद्यालयों को छोड दें तो लखनऊ, इलाहाबाद, बनारस, कलकत्ता आदि अनेक विश्वविद्यालय शतप्रतिशत बेहतरीन कैम्पस रहे हैं। जेएनयू, जामिया मिल्लिया, आईआईटी दिल्ली भी कैम्पस के बेहतरीन उदाहरण हैं।जेएनयू और जामिया मिल्लिया की विचारधारा अलग है और देश की एकता को तोडने वाली है, यह अलग बात है। इससे उन का कैंपस–स्वरूप समाप्त नहीं हो जाता। तकनीकी संस्थानों का भी अपना विशिष्ट कैम्पस है। आईआईटी और आईआईएम के कुछ संस्थान अन्तरराष्ट्रीय संस्थानों की श्रेणी के हैं। पिछली शती में स्वामी श्रद्धानन्द (बाद का नाम) द्वारा 1902 में स्थापित गुरुकुल कांगडी, रवीन्द्रनाथ टैगौर द्वारा स्थापित शान्ति निकेतनऔर महामना मदनमोहन मालवीय जी द्वारा स्थापित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय कैम्पस के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। कुरुकुल का मुझे साक्षात् अनुभव है। ब्रह्मचारी, सपरिवार अध्यापक तथा कर्मचारी सभी एक कैम्पस में रहते थे। परिसर के सहपाठी मित्र, अध्यापकों तथा कर्मचारियों के साथ जो अपनापन था वह अपने सगों से कहीं बढ कर था और आज तक कायम है। कैम्पस की शक्ति और आकर्षण का यह बेहतरीन उदाहरण है। वहाँ रहने के बाद जो व्यक्तित्व बना वह जीवन का स्थायीभाव हो गया।

ऑनलाइन,कैम्पस या कक्षा–अध्यापन से भिन्न विधा है। कैम्पस या कक्षा–अध्यापन किसी कारण यदि संभव न हो, जैसा इस समय लॉकडाउन के कारण है, तब अध्यापन के लिए यही एक विकल्प उपलब्ध है। इस समय इसी विधा से अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। सामान्य स्थिति होने पर भीऑनलाइन विधा को उन विद्यार्थियों के लिए जो किसी कारण कैम्पस या कक्षा–अध्यापन से वंचित हों, बहुत उपयोगी बनाया जा सकता है।इसके लिए विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों को एक अतिरिक्त व्यवस्था काप्रबन्ध करना होगा। तकनीकी ढांचा, अध्यापक और कार्यालय की व्यवस्था करनी होगी। छात्र इस ऑनलाइन अध्ययन के लिए अलग से रजिस्ट्रेशन कराएंगे। पाठ्यक्रम और परीक्षा ऑनलाइनतथा कक्षा–अध्यापन दोनों विधाओं की समान होगी। ऑनलाइन के विद्यार्थियों को भेजे गए पाठ का उसी पाठ में बताए गए निर्देशों के अनुरूप होमवर्क (रिस्पॉस शीट) निर्धारित समय में तैयार करके विद्यार्थी को वापस भेजना होगा। निर्धारित प्रतिशत होमवर्क पूरा करने के आधार पर ही विद्यार्थी परीक्षा में शामिल हो सकेगा। संयोजक संस्था विद्यार्थियों को भेजे जाने वाले प्रत्येक पाठ को उसविषय के अधिकारी विद्वान अध्यापक से तैयार कराएगी। समय समय पर इसका नवीकरण भी होगा। इसके लिए उपयुक्त भुगतानकिया जाएगा और यह सामग्री नियोजक संस्था की मिल्कियत होगी। पाठ्यक्रम पूरा कर लेने पर विद्यार्थी को जो डिग्री मिलेगी उसमें ऑनलाइन विधा का उल्लेख होगा। यह सारी व्यवस्था सशुल्क होगी तथा रजिस्टर्ड छात्रों तक सीमित होगी। नियोजक संस्था, आरंभिक दौर में विश्वविद्यालय स्वयं तथा उससे संबद्ध कोई कॉलेज हो सकता है। बाद में इस विधा के प्रतिष्ठित होने पर प्रतिस्पर्धी सिद्धान्त के आधार पर कोई भी समर्थ संस्था अपने बलबूते इस क्षेत्र में प्रवेश कर सकती है। पाठ्यक्रम और परीक्षा अधिकृत विश्वविद्यालय की ही होगी। इस प्रतिस्पर्धी प्रक्रिया में जो संस्थान योग्यतम होगा वही बचेगा। इस समय

प्रचलित पद्धति में भी आईआईटी और आईआईएम में योग्यतम संस्थाएं विद्यार्थियों का प्रथम विकल्प होती हैं। केवल व्यवसाय के उद्देश्य से स्थापित वे संस्थाएं,जिनका स्तर बहुत निम्न श्रेणी का होता है कुछ समय बाद अपनी मौत मरजाती हैं। ऑनलाइनअध्यापन की इस विधा का यदि सुविचारित योजना के अनुसार प्रतिबद्धता से प्रयोग किया जाए तो उच्च शिक्षा के क्षेत्र में जो संख्या का दबाव है उसे कम किया जा सकता है। इससे विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन के स्तर में भी सुधार होगा।

अध्ययन–अध्यापन की वर्तमान परंपरागत व्यवस्था में भी ऑनलाइन विधा का लाभ लिया जा सकता है। कक्षा–अध्यापन को विषय के अनुरूप यथा संभव ऑनलाइन किया जाय। इससे जो समय बचेगा उस का सदुपयोग कक्षा को छोटे ग्रुपों में बांट कर छात्र और अध्यापक परस्पर संवाद–पद्धति से अध्ययन करें। दूसरे स्तर पर सेमिनार, डिबेट आदि की सहायता से अध्ययन में प्रखरता लायें। अन्तिम चरण में किसी अधिकारी विद्वान का इसी विषय पर व्याख्यान करायें जिस में विद्यार्थी केवल श्रोता न हो कर सहभागी हों। यदि अध्यापक मनोयोग से चाहें तोइस प्रक्रिया को सफल बनाया जा सकता है। यह प्रक्रिया महज विभागीय लेखाजोखा न हो। जिन तकनीकी विषयों में लैक्चर की अपेक्षा प्रयोगशाला (लैब) में काम अधिक महत्वपूर्ण होता है वहां ऑनलाइन अध्यापन से जितना भी लाभ लिया जा सके उसके लिए स्वयं विभाग ही योजना बना सकता है।

अपने देश में ही नहीं विश्व में ऐसी स्थिति बनती नजर आ रही है कि अब कोविड 19 के साथ संघर्ष को जारी रखते हुए अपना बचाव करके इसके साथ ही जीना होगा। शिक्षा के क्षेत्र में सभी विधाओं की अपनी अपनी सीमाएं हैं। निःसंदेह कैम्पस अध्ययन बेहतरीन है। ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज जैसे प्रख्यात् विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम ऑनलाइन उपलब्ध होने के बाजूद विद्यार्थी बहुत धन खर्च करके भी वहां कैम्पस में रह कर पढने की लालसा रखते हैं। यह इसीलिए कि वे अपने व्यकतित्व पर इन विश्वविद्यालयों की छाप की कीमत समझते हैं। परन्तु आज जनसंख्या बाहुल्य और सीमित संसाधनों के कारणकैंपस–अध्ययन सबके बस की बात नहीं। कक्षा–अध्यापन अपने देश में बहुतायत से उपलब्ध है। बहुसंख्य विद्यार्थी इसी विधा से स्नातक स्तर तक शिक्षा पाते हैं।ऑनलाइन अध्यापन किसी अन्य विधा का विकल्प न होकर एक अतिरिक्त विधा है। बदलाव के समय हम इसे जितना उपयोगी बना सकें उतना ही अच्छा।

Personality Development

Kaptan Singh
President , SMES

Personality is the totality of characteristics of an individual like physical fitness, manners, social skills , communication skills , character , attitude etc which distinguishes him or her from others . It is the BRAND IMAGE of an individual. The Oxford dictionary defines 'personality traits' as a person's distinctive character. Personality comes into play in each and every activity, thought and behvior of an individual. It accompanies a person anywhere and everywhere he goes and exhibits itself in whatever he does . We should not mistake physical attributes of an individual as his/her personality as personality has nothing to do with height , good looks , complexion or the physique of a person . Any physical shortcomings can hardly influence your personality . The fact remains that a person of repute is identified because of his personality traits mentioned earlier .

Development

Personality development is the process of improvement of characteristics of an individual . If personality is developed on the solid base of values and ethics , it will last for ever . Fake smiles and mannerisms are short lived and do not help in improving one's personality .

Characteristics/Traits & Development

1. **Physical Fitness**
   Body is the means to carry out all activities of life and performing our duties . Therefore a healthy body is the first and the foremost requirement which enables us to discharge our duties in life

efficiently . It may be remembered that health or fitness is not merely absence of sickness but it is a dynamic state where physical and mental faculties function at peak level .Our wise men time and again have said that sound body ensures sound mind . Mental and physical health go hand in hand and the two contribute to total well being of a person . We inherit our build and physical features but by following the simple rules of health and hygiene we can improve and maintain our body at its highest possible level . Smoking , consuming alcoholic drinks ,irregular hours of various activities , overeating , ignoring rules of hygiene and sanitation , lack of physical exercise , negative mental attitude are enemies of health and should be avoided at any cost . Fortunately at present there is all round awareness about fitness . Students should use sports , aerobic and other forms of physical exercises ,Yoga , Pranayam , Meditation etc to maintain their health . Remember responsibility to remain physically fit rests on individuals and they have only one body which will be with them till death .

2. Manners

Good manners , courtesy , politeness are all manifestations of a person's consideration ,regard or respect for others . Public mannerisms should be such that they can create an everlasting impression on the people you meet . Good manners are the best and least expensive investment one can make .Our manners are categorized as good or bad depending on the kind of society we live in . .But there is no age , time of the year or period of life when you can not learn the art of better public mannerism .

Some poor manners often noticed in Indian youth are:

Biting nails when in stress.

1. Making slurping sounds while drinking and eating.
2. Spitting in public places .
3. Crossing the road whenever you feel like .
4. Cutting rude and vulgar jokes in front of lady colleagues .
5. Treading on grass in the park.
6. Jumping queues .
7. Smoking at a prohibited place .
8. Occupying the street in a group while walking on the pavement .
9. Participating in spreading rumors .

The breeding ground of all good and bad manners is the home . If a young boy has always seen his elders in the family abusing the female members , he will never hesitate in doing that . Many students are in the habit of walking around in shorts or a dress that is not presentable while they are at home . They must have learnt all this from their parents. It will be good if parents and teachers try to inculcate mannerism in their wards.

3. <u>Social Skills</u>

Man is a social animal .Life , from infancy to old age ,consists of interaction with others . At home ,with parents , brothers and sisters . In the larger family with relatives . In school and college with co-students , friends and teachers . In day to day transactions , we have to deal with outsiders i.e. people of different strata of society . Interpersonal relationships /social skills play important role in the success of a person . There are several determinants which decide level of our social skills . Some of them are presented below:

1. The initial impression of anyone is generally influenced by the latter's personal appearance .Therefore , one should always be presentable and well-groomed . It does not mean that one should wear costly or fashionable clothes . It will be better if we wear a dress as per the location and requirements and which is neither gaudy or untidy .
2. We should be courteous and respectful to all . To be haughty or overbearing creates prejudices while humility and unpretentiousness create favorable impressions on all .

3. Never talk negative and unkind words . Do not allow personal ego to dictate relationships . Exercise patience with others . Never advertise the good you do to others and keep the promises made to them .
4. We should develop our social skills in conformity with customs , manners , traditions and conventions prevalent in the society in which we live and at the same time ensure that we do not become prisoners to them by blindly following them.
5. Within our limitations we should be ready to provide service , active help ,encouragement or consolation to the needy people around us including our parents ,relatives and friends .
6. Everyone's personal welfare and success in life are closely linked to efficient discharge of duties . For example students' first duty is to study . One should discharge his duty to the best of his ability .
7. A person ,especially a student , moves with many people with common pursuit ,goals and interests which sometimes results in friendships . But one should be selective and careful in friendships and avoid the company of fellows in any forbidden activities in as much as friendship of undesirable people could lend you in trouble . Remember a man is known by the company he keeps .
8. One should exercise discipline in all activities . It is self-control ,self restraint , conservation of energy and resources . It ensures relaxed and ordered life .
9. Our social activities should not be influenced by likes and dis-likes . If you accept with a smile anything that comes your way in the course of living or working it makes life easier not only for you, but for others too .
10. We should try to develop prudence , being careful ,discreet and cautious , in all social relationships .

4. <u>Communication Skills</u>

Communication is the process of sharing information, ideas and opinions . It involves a systematic and continuing process of telling , listening and undertaking . You may have good knowledge of your field, excellent skills and volumes of potential , but the the world will know about all these only if you can properly present yourself as well as the qualities you have . Most people fail in competitions due to lack of effective communication skills . This is more important in cases of selection through interview and personality test . Following areas need to be worked upon to enhance communication skills:

i. Written communication
ii. Verbal Communication

Greater your skills in writing and speaking , the greater your chances of success in many aspects of life , starting from friendship to professional progress .

Written Communication

Writing , in other words , is above all for conveying ideas and feelings from your mind to another mind . Good command of a language ,particularly English , could prove effective not only passing exams , but in other spheres also . The hallmarks of good writing are accuracy, appropriateness , brevity , correctness and clarity . Following steps help to improve writing skills :

i. Improvement in Vocabulary .
ii. Mastering grammar .
iii. Understanding secrets of Punctuation.
iv. Use of Dictionaries .
v. Studying techniques of writing letters , reports ,job applications etc .
vi. Editing your own writing .

Verbal Communication

The skills of good speaking cover general aspects of speech conducting an everyday conversation to being interviewed by an employer etc .n Improvement in following areas are required to enhance these skills :

i. Voice and Speech .
ii. Control Breathing .
iii. Pace, Pause and Rhythm .
iv. Pitch and Intonation .
v. Emphasis and Resonance
vi. Articulation-Turning voice into speech.
vii. Pronunciation-Impediments and Speech habits .
viii. Projecting your voice .
ix. Care of the Voice .

5. Character

Character is the foundation of individual's personality. This is simply the constant radiation of what man really is , not what he pretends to be . Out of all the traits of a man character is the most difficult to change . Character is the structure of the personality and is developed on several layers of dynamics of life . The character of a man comes to its fore at times of distress . People who face problems of life with grace ,stand in high esteem of those around them . According to social scientists character ethics have following dimensions :

i. Integrity
ii. Humility
iii. Fidelity
iv. Temperance
v. Courage
vi. Justice
vii. Patience
viii. Simplicity
Modesty

6. Attitude

Attitudes play important role in life . We can be our own benefactor or enemy depending upon whether our thoughts are positive , constructive and creative or are destructive and obstructive . Positive thinking begets positive results and negative thinking begets negative results .Love , compassion ,optimism , self esteem , helping attitude are all positive thinking . Hatred , animosity , selfishness , pessimism and self-condemnation are all negative thinking . Introspection , self-confidence ,meditation and faith in social value systems are the tools to bring positive changes in the negative attitudes .

7. Misc Issues Pertaining to Students

Preparing for Examinations

Studying in schools and colleges is ,ultimately, to obtain a degree or diploma which forms a passport to higher studies or employment . These require prescribed qualifications . Following action plan may help the students to achieve better academic performance :

1. As soon as you buy text books at the beginning of a term just read them . This will familiarize you with the contents /topics . As soon as the classes begin , each day thereafter ,read beforehand at home , topics that will be dealt with in the classroom on that particular day .
2. Be attentive in the class room and record the academic content on a rough notebook . As soon as you reach home revise the topic and note it on an othernotebook . Any problem may be discussed with the teacher in the next teaching day .
3. Do not postpone your reading to the time when exams are near and revise all lessons many times over as early as possible ,regularly and at intervals . Now there will be no need for special preparation for exams .
4. Collect as many subject wise question papers of previous years as possible and familiarize with these questions and answers
5. Be brief and to the point while writing answers in the exams . The impression that long answers obtain larger marks is not true .

Career Planning

One of the most important decision in a student's life is to choose a right professional course after 12th as it can lead to a rewarding career right after completion of 12th or can make one eligible for higher courses . It is a difficult decision because there are so many good options which are available these days but the student does not know which is best for him.

ENGINEERING & TECHNOLOGY

There are lot of chances for a good career in engineering after 12 thstandard . Student may choose from the following:

1. Aerospace Engineering
2. Agriculture Engineering
3. Architecture
4. Biotechnology
5. Biomedical Engineering
6. BCA
7. Ceramic Engineering
8. Chemical Engineering
9. Civil Engineering
10. Computer Science & Technology
11. Electrical Engineering
12. Electronics & Communication
13. Energy Engineering
14. Instrumentation Engineering
15. Manufacturing Science & Engineering
16. Mechanical Engineering
17. Metallurgical Engineering
18. Mining Engineering
19. MCA
20. Naval Architecture
21. Nuclear Engineering
22. Textile Technology
23. Industrial Engineering
24. Five year B.Arch
25. Applied Geology
26. Exploration Geophys
27. **5 Year Integrated M.Tech Course**

Chemical Engineering
Electric Engineering
Engineering Management
Mechanical Engineering
Biotechnology

28. Pharmacy
29. Dairy Technology
30. Diploma Courses of Engineering
31. Lab Technicians

Medicine & Dentistry

The medical field is an important professional option after 12th . This field offers a vast number of career opportunities other then MBBS which include health care industries ,pharmaceutical industries , hospitals and research laboratories . Student may choose from the following :

1. MBBS
2. BDS

3. BHMS (Homeopathy)
4. BUMS (Aurvedic)
5. BUMS (Unani)
6. Nursing
7. Physiotherapy
8. Occupational Therapy
9. Vet nary Science
10. Medical Lab Technician
11. Naturopathy and Yogic Sciences

Management

Management is one of the highly job oriented field . It provides responsible and challenging positions to an aspirant who wants to work in the corporate sector . Student may choose from the following :

1. BBA Bachelor of Business Administration
2. MBA Master of Business Administration
3. Marketing Management
4. Finance Management
5. Human Resource Management
6. International Business Management .
7. Event Management
8. Retail Management
9. Rural Management

Commerce

Commerce is a gateway for the finance and accounts world for all corporate sectors .Student may choose from the following :

1. B.Com
2. CA Chartered Accountant
3. CS (Company Secretary)

Arts & Humanities

This field has number of business oriented courses that a student can pursue with any stream in class 12th .Student may choose from the following :

Law courses

1. Animation and Multimedia
2. Fashion Technolog
3. Visual Arts
4. Aviation
5. Hospitality Management
6. Hotel Management & Catering
7. Mass Communication
8. Journalism
9. Commercial Pilot
10. Air Hostess

Other Courses

1. Photography
2. Music
3. Painting
4. Interior Designing
5. Physical Education
6. Library Science
7. Web Designing

8. Modelling
9. Tourism

Besides above there are number of government jobs including Police ,Transport , Army .Industrial Security etc .

We must remember that learning is a life longprocess . Only a fourth part of knowledge does one gather from teachers . A quarter the student acquires by self effort . Another quarter he learns from his co-students .And the final quarter accrues in course of time making him fully knowledgeable.

रायबहादुर चौ0 अमर सिंह साहब–एक युगपुरुष

(10.04.1879–17.06.1935)

डा0 निरंजन लाल शर्मा

रायबहादुर चौधरी अमर सिंह साहब का जन्म 10 अप्रैल 1879 ई0 को उत्तर प्रदेश में जनपद बुलन्दशहर के ग्राम पाली–परतापुर के जमींदार घराने में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री (डिप्टी) नारायण सिंह व माता का नाम श्रीमती लक्ष्मी था। जमींदार परिवार में पालन–पोषण होने के बावजूद भी इस महापुरूष में अपने क्षेत्र के गरीबों व अत्यंत पिछड़े लोगों के प्रति हमदर्दी एवं सहृदयता का बीज अंकुरित हुआ और उन्होंने अल्पायु में ही किसानों, मजदूरों, गरीबों और समाज के पिछड़े लोगों के उत्थान के लिए शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी प्रयास किया। उनका कहना था कि आजादी के लिए प्रतीक्षा की जा सकती है परन्तु शिक्षा के लिए नहीं क्योंकि शिक्षित समाज अपने लक्ष्य को आसानी से पा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में उन दिनों शिक्षा संस्थाओं का अभाव था तथा शिक्षा ग्रहण करने के लिए दूर शहरों में जाना पड़ता था जो साधन विहीन आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए मुश्किल ही नहीं सर्वथा असम्भव था। चौधरी साहब स्वयं मिडिल पास थे जो उन्नीसवीं सदी में एक बड़ी शैक्षिक योग्यता समझी जाती थी। अत्यंत पिछड़े ग्रामीण परिवेश से अपने जीवनपथ की लम्बी यात्रा करने वाले इस पुरोधा ने क्षेत्र के समग्र विकास के लिए बीडा उठाया और उस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

अपने स्वप्न को साकार करने के लिए इस महान विभूति ने बीसवीं सदी के प्रारम्भ में सन् 1905 ई0 में अपने निवास स्थान (पाली) पर एक प्राथमिक पाठशाला के रुप में शिक्षण संस्था प्रारम्भ की तथा समस्त प्रवेशित छात्रों को मुफ्त शिक्षा देने का संकल्प लिया। छात्रों की बढ़ती हुई संख्या को दृष्टिगत रखते हुए सन् 1910 ई0 में प्राथमिक पाठशाला को वर्तमान स्थल लखावटी गांव में स्थानान्तरित किया गया जहां ब्रिटिश मिशनरियों द्वारा प्राथमिक विद्यालय चलाया जा रहा था। इस कार्य में उन्हें तत्कालीन ब्रिटिश हुकूमत का विरोध भी आड़े आया लेकिन उस महान व्यक्ति ने क्षेत्रीय जनता के सहयोग से सन् 1910 ई0 में झपदह म्कूंतक डमउवतपंस ैबीववस की स्थापना की, साथ ही साथ देश की आजादी के लिए जनता को जागरुक करने का शुभारम्भ भी किया। चौधरी साहब के अथक प्रयासों से सन् 1913 में जूनियर हाईस्कूल व सन् 1916 में हाईस्कूल के रूप में सरकार से मान्यता प्राप्त हुई। कालान्तर में जिसकी सन् 1931 ई0 में इन्टर कृषि एवं सन् 1934 में इन्टरमीडिएट कला के रूप में उन्नयन हुआ। इसी क्रम में 01 अप्रैल 1930 को संयुक्त प्रान्त के तत्कालीन गवर्नर सर विलियम मार्शल हैले ने हैले छात्रावास की आधारशिला रखी जहां अल्प अवधि में ही 52 वृहत् कक्षों के भव्य छात्रावास का निर्माण हुआ। इस छात्रावास के निर्माण में क्षेत्रीय जमींदारों ने भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

चौधरी साहब के अथक प्रयासों से ही महाविद्यालय में विशाल व भव्य मुख्य द्वार का लॉर्ड मैकेन्जी के नाम पर निर्माण हुआ। यह महाविद्यालय का मुख्य द्वार अपने आप में एक कला का नमूना आज भी लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। यही संस्था सन् 1941 ई0 में कृषि मिहाविद्यालय के रूप में आगरा विश्वविद्यालय से सबंद्ध हुई और इस प्रकार इस कॉलेज को उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में प्रथम कृषि महाविद्यालय होने का गौरव प्राप्त हुआ है और 1963 में कृषि विषयों में स्नात्कोत्तर व 1985 में कला संकाय में स्नात्कोत्तर कक्षाएं प्रारम्भ हुई। आज यह संस्था देश की एक अग्रणी कृषि संस्था के रूप में विख्यात है जिसका विस्तार प्रदेश से बढ़कर अन्य प्रदेशों तक पहुंचा है।

विगत वर्षों में जम्मू–कश्मीर से लेकर आंध्रप्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, हरियाणा, बिहार, मणिपुर तक के छात्र–छात्राएं इस महाविद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर अनेक क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित कर चुके हैं।

इस युगपुरुष ने इस संस्था के लिए अपने जमींदारी के 600 बीघा भूमि मुफ्त में दान दी जिसका वर्तमान मूल्य लगभग एक अरब है। साथ ही साथ जीवन पर्यन्त इस संस्था का समस्त व्यय वहन किया। अपने निजी संसाधनो से जो आय प्राप्त होती थी उससे संस्था का संचालन किया जाता था, साथ ही क्षेत्रीय जनता के अल्प आर्थिक सहयोग को भी संस्था के विकास में लगाया जाता था। शहरी बड़े–बड़े धन्ना सेठों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में धनाभाव था लेकिन इस महापुरुष ने कभी भी धन को संस्था के विकास में आड़े नहीं आने दिया। यही कारण था कि सन् 1920 के आसपास हाईस्कूल में छात्रावास सुविधा सुलभ थी तथा इन्टर होते–होते दो छात्रावास उन्होंने स्वयं अपने धन से बनवाये थे। सन् 1922–24 में विद्युत–आपूर्ति हेतु एक जनरेटर भी विद्यालय में सुलभ था। जहां तक शिक्षकों का प्रश्न है जिनके बारे में भी अच्छे शिक्षक होने का पता उनको होता था। उन्हें किसी भी कीमत पर अपने विद्यालय में नियुक्त कर लेते थे। इसी प्रकार क्षेत्र में घूम–घूम शिक्षा से वंचित योग्य छात्रों को प्रवेश हेतु लाया जाता था और इस प्रकार युगदृष्टा के क्रान्तिकारी पुरूषार्थ के परिणामस्वरूप इस महाविद्यालय के अनेक छात्र देश व विदेश में शीर्ष पदों पर विराजमान हुए और और यह क्रम अनवृत जारी है और रहेगा। चौधरी साहब द्वारा इस संस्था का निर्माण इंग्लैंड से लाए एक मानचित्र के अनुसार कराया गया था तथा उनका संकल्प था कि यह संस्था विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित हो लेकिन 17 जून 1935 को उनके आकस्मिक निधन के कारण यह स्वप्न अधूरा रह गया।

आज जहां शिक्षण संस्थाएं अपने निजी लाभ के लिए खोली जा रही हैं इसके विपरीत रायबहादुर साहब ने अपनी आय का एक बड़ा भाग सदैव इस संस्था के विकास में व्यय किया। चौधरी साहब अपने विद्यालय के छात्रों को अपनी संतानों के रूप में देखते थे तथा प्रायः अपने बाग से आम आदि मंगवा कर उनमें मुफ्त बंटवाये जाते थे। चौधरी साहब अपनी माता–पिता की इंकलौती संतान थे तथा पिता जी स्वयं तत्कालीन सरकारी व्यवस्था में डिप्टी थे और एक बड़े जमींदार भी थे। परिवार में सम्पन्नता थी जिसका प्रमाण आज भी उनके ग्राम पाली में खड़ी विशाल अद्भुत हवेली है। रायबह्दुर साहब का प्रारम्भिक जीवन वैभवपूर्ण तथा जनपद में प्रथम निजी कार रखने का गौरव भी उन्हीं को मिला। रायबहादुर चौ0 अमर सिंह साहब के दो विवाह हुए तथा उनकी दूसरी पत्नी का नाम श्रीमती सुखराज कुंवरी था। रायबहादुर साहब के एक सुपुत्र श्री कुंवर बिजेन्द्र सिंह व तीन सुपुत्रियां थीं। श्री बिजेन्द्र सिंह को समस्त जनता कुंवर साहब के नाम से सम्मान देती थी तथा चौधरी साहब के स्वर्गवास के पश्चात् कु0 बिजेन्द्र सिंह व माता श्रीमती सुखराज कंवरी ने महाविद्यालय में विशेष योगदान दिया है।

ब्रिटिश राज में सन 1911 में किंग एडवर्ड व सन् 1922 में महारानी विक्टोरिया के निमन्त्रण पर चौधरी साहब ने महाराजा जोधपुर के साथ इंग्लैंड की यात्राएं की तथा सन 1922 में चौधरी अमर सिंह साहब को ओ.बी.ई (रायबहादुर) की उपाधि से अलंकृत किया गया। यह उपाधि उनकी इस क्षेत्र में लोकप्रियता, निर्भीकता एवं सिद्धान्तवादिता के प्रति दिया गया सम्मान था जिसका उपयोग आगे चलकर जन कल्याण के लिए किया गया। उनके परिवार का कोई भी व्यक्ति इस ओहदे से कभी लाभान्वित नहीं हुआ।

सन् 1929 ई0 के दिसम्बर के अंतिम दिनों में भरतपुर सप्ताह मनाने का आयोजन हुआ। सारे भारत के जाटों ने भरतपुर के दीवान मैकेंजी और मिंया नकी की अनुचित हरकतों की गांव–गांव और नगर–नगर में सभाएं करके निंदा की। रायबहादुर चौधरी छोटूराम जी–रोहतक, रायबहादुर चौ0 अमर सिंह–पाली, ठाकुर झम्मन सिंह एडवोकेट–अलीगढ़ और कुंवर हुकम सिंह जी रईस–आंगई जैसे प्रसिद्ध जाट नेताओं ने देहातों में पैदल जा–जाकर जाट सप्ताह में भाग लिया। गांव–गांव जाकर ब्रिटिश शासकों के विरूद्ध जन जागरण ही नहीं किया बल्कि स्वतंत्रता आन्दोलन को एक नई दिशा देकर राजस्थान व आसपास के समस्त लोगों को उसमें सक्रिय किया और अन्त में यह आन्दोलन महाराजा भरतपुर के नेतृत्व में देशव्यापी एक विशाल जन अभियान के रूप में परिवर्तित हुआ और स्वतंत्रता प्राप्ति में इस आन्दोलन का उल्लेखनीय योगदान माना जाता है।

रायबहादुर चौ0 अमर सिंह साहब जिला परिषद् बुलन्दशहर के प्रथम अध्यक्ष पद पर आसीन रहे और इस प्रकार जनपद के विकास में उनका विशेष योगदान रहा है। वे जीवन पर्यन्त मजिस्ट्रेट के पद पर भी आसीन रहे तथा इस पद पर रहकर वे अपनी गांव वाली हवेली में ग्रामीण जनता के मुकदमों की सुनवाई कर न्याय किया करते थे। रायबहादुर चौ0 साहब ने क्षेत्र में पेयजल व सिंचाई हेतु जल के अभाव को दूर करने के लिए भागीरथ प्रयास किया और सर्वप्रथम गहरे कुएँ (डीप वैल) का प्रथम बोरिंग कराया तथा समस्त क्षेत्र में इसे लोकप्रिय बनाने के लिए आर्थिक सहायता दी। चौधरी साहब की गंगा मैया के प्रति अगाध श्रद्धा थी तथा सदैव गंगाजल मिश्रित जल से स्नान करते थे तथा स्नानोपरान्त गायत्री साधना भी किया करते थे। यहां तक कि अपनी इंग्लैंड यात्रा के दौरान भी गंगाजल पात्र साथ लेकर जाना नहीं भूले थे।

बुलन्दशहर (उ.प्र.) के इस क्षेत्र में दूर–दूर तक कोई अस्पताल नहीं था तथा क्षेत्रीय जनता छोटी–बडी बीमारियों के लिए नीम–हकीमों पर निर्भर रहते थे अथवा अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे। इस समस्या के समाधान हेतु चौधरी साहब ने लखावटी गांव में बने अपने निज प्रयोग में आने वाले आवास को डिस्पेंसरी में परिवर्तित किया और वहां पर डॉक्टर व कम्पाउंडर आदि की नियुक्ति कर जनता को इलाज की मुफ्त सेवा प्रदान की। अस्पताल को कालान्तर में विद्यालय से ही जोड़ दिया गया और उसका सम्पूर्ण व्यय विद्यालय से एवं अन्य अल्प सरकारी अनुदान से किया जाता रहा।

गरीबों व लघु कृषकों व मजदूरों के लिए उनके मन में बेहद टीस थी, इसके लिए वे सदैव क्षेत्र में भ्रमण कर लगान माफी, अनाज व वस्त्र वितरण आदि कार्यक्रम आयोजित किया करते थे। अपने समकालीन समाज में उन्हें गरीब लोग अपना मसीहा मानते थे। उनके दर पर जो भी जन जाता, खाली हाथ नहीं लौटता था। जाति एवं धर्म की संकीर्णता से वे ऊपर थे तथा उनके परिवार में एक हरिजन उनका रसोइये का कार्य करता था। अल्पसंख्यकों में भी उनका बहुत सम्मान था तथा जनपद व समस्त संयुक्त प्रान्त में आम जनता, जमींदारों व राज घरानों में उनका नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाता था।

वर्तमान में रायबहादुर चौ. अमर सिंह साहब के परिवार में उनके पांच पौत्र हैं जिनमें विंग कमाण्डर कुंवर योगेन्द्र सिंह, कर्नल कुंवर (स्व.) शैलेन्द्र सिंह, कुंवर प्रद्युम्न सिंह, कुंवर सिंदुल सिंह व कुंवर (स्व0) राघवेन्द्र सिंह तथा दो पौत्री श्रीमती महिमा सिंह व श्रीमती संज्ञा सिंह जो उनके आदर्शों व विरासत को आगे बढ़ाने के लिए सदैव प्रयासरत रहे हैं।

यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगा कि शिक्षा के क्षेत्र में चौधरी साहब द्वारा स्थापित इस संस्था से एक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। आज भी देश–विदेश में इस शिक्षण संस्था का बड़ा नाम है।

ऐसे युगपुरूष, सर्व–त्यागी, क्रान्तिकारी, समाजसेवी, परोपकारी व गरीब नवाज पुरुष विरले ही होते हैं जो इस संसार में अल्प अवधि के लिए आते हैं और समाज को शिक्षा की मसाल देकर जीवन की सही दिशा दिखाते हैं और अपना जीवन भी धन्य करते हैं। ऐसी महान आत्मा को हम शत्–शत् नमन करते हैं।

Report on Online Teaching during Lockdown period

Dr. (Prof.) Rachita Rana
Director, MSI

Mahaaraja Surajmal Institute is committed to nurture excellence, impart value based quality education and training to be the world class professionals. MSI has adopted a well formulated, holistic quality Management systems conforming to the international standards. The Institute emphasizes on process oriented approach in teaching learning and persistent capacity building of both students and the faculty. The Institute takes education as a social responsibility contributing its mite towards the national growth and skill development.

All educational institutes being locked down due to COVID-19, teaching fraternity of Maharaja Surajmal Institute has moved to virtual classes to ensure *"learning never stops."* In this hour of crisis when the classroom teaching is not possible; students were engaged actively using online means as per the nature of the subject being taught to them. For the purpose of streamlining and effective delivery schedules were prepared and executed. The institute has adopted various innovations in pedagogy that have created positive impact and achieving the objective of quality enhancement, assurance and sustenance.

In the wake of this pandemic and keeping the students' safety in mind along with their academic concerns, all departments of MSI have been endorsing online learning so that the teaching-learning continues. The pedagogy is briefly summarized:

- **Emphasis on E-Mode and Digital interactive teaching learning process**

i. A judicious mix of imparting instructions for comprehension and assimilation of fundamental concepts.

ii. Acquisition of conceptual & practical skills.
iii. Motivation and guidance for problem solving skills through case studies, Projects & Lab exercises.
iv. Welcome students for removal of doubts.

- **Individual Assignments, assigned in advance which is to be submitted on-line in stipulated time frame to**:-

i. Strengthen grasp of subjects
ii. Help in imbibing habits of self study
iii. Enable students to search additional study material from library/internet/journals etc.
iv. Help to build self confidence in application of acquired knowledge

- **Laboratory experience design**

i. Students complete an augmented list of practical exercises online including those in the prescribed syllabus.
ii. Train in information processing as an integral part of the work.

- **Training in group working / Interpersonal skills**

i. Assignment/ presentations/ project in a group of 4-5 students to give them experience of group working with synergy, harmony and sound interpersonal Management skills on various e-platforms
ii. Group discussions & Mock Interview, Quiz Competitions, Viva-Voce, Classroom Seminars etc through online mode.

- **Presentation on completed minor /reach oriented major projects**
- **Special instructions on on-line certification courses, curriculum enrichments.**
- **online Assessment and evaluation**
- **Online Internships, placements through work from home at present.**

Department of Business Administration and Commerce

All the teachers kept learners engaged through various digital modes. Some of them are mentioned below:

- **Google Class room to** post the relevant study material and Give assignments to the students on regular basis, and also for assignment submission by students.
- Lectures were recorded & were posted on **You-Tube** channel or were saved on **Google Drive** and shared the link to the students using **WhatsApp** or **Google Classroom**.
- Many Apps like **Zoom, Google Meet etc.** were used for recording lectures in online or Offline mode and then sharing the lecture with the students.
- Topic wise notes in suitable doormats like Word, pdf, jpg etc. was shared for the subjects as per the syllabus.

The faculty not only did teaching using ICT enabled modes but also used online **assessment tools** for continuous and comprehensive evaluation using TESTMOZ and GOOGLE forms. In order to reassure our students to avoid any kind of stress and panic in the prevailing situations of COVID-19 outbreak vis-a-vis their studies, health and related issues, Mental Health and Student Well-being committee was formed by each Department and queries of the students were resolved. Moreover to ensure uninterrupted teaching and learning at home and minimise academic loss by leveraging the potential of ICT faculty also shared links of digital platforms developed by MHRD and UGC with the students. For the overall well-being of college students and with a faith of COVID Free New Bharat, the Department of Commerce, started a series of inter college contests like e-poster, e-poetry composition under HOPE: Hall of Personal Expression in was held on April 11, 2020. The students actively participated in these events. Students were also encouraged to participate in NSS activities like spreading awareness about Aarogya Setu App, collection of funds for PM Care Fund and other social issues during this period.

The faculty of various departments also actively participated in webinars, ICT Learning, Panel Discussions and online Faculty development programs.

Department of Computer Applications

Department of Computer Applications, opted several methods to engage its students actively using online means as per the nature of the subject being taught by different teachers.

Google Classroom- "G Suite for Education" is a suite of free Google Apps tailored specifically for schools and colleges. MSI is already registered on this platform. It is being used for sharing knowledge resources, notes, recorded lectures, assignments and streamline administrative tasks. Teachers can provide instant feedback and track a student's progress to improve performance.

You-tube- You tube is also found to be another useful tool by several teachers. Teachers record their lectures by their phones/camera at their home and upload them on their You- tube channel. The link of the lecture is shared using **Whats App** or **Google Classroom.**

Zoom App- Zoom is a video-conferencing app which is being used for synchronous class sessions. Everyone logs in to a web conferencing system at a pre-scheduled time. 100 students can join simultaneously. Zoom can also be used to record the lectures in offline mode which can be shared to the students either using Google classroom or You-tube channel.

Website- Understanding the need of this tough time, Students of BCA [Morning] took it as a challenge and developed a website in a very short span of time to share the subject notes among students: https://apnanotesite.pythonanywhere.com
Teachers are uploading their subject notes on this website. Department of Computer Applications appreciates the efforts of its students Mr.Prajesh Puri, Mr. Pranav Khurana, Mr. Nagender, Mr. Archit Bansal, Mr Anish agarwal along with their teacher mentor Mr. Manoj Kumar.

Students were also encouraged to join the online certification courses conducted by our learning partner ICT. Several BCA students and faculty members attended those courses and gained certification.

However there is no replacement of classroom teaching- learning, I still hope that we teachers are doing our best to utilize this time in favour of our students using online means of teaching-learning.

Department of Education
Teachers enthusiastically initiated virtual classes on a daily basis, and thus, teachers are unfailingly sharing their lessons over skype call, zoom call or any other virtual class options to keep the learning on. These e-learning programs have been designed to improve communication with each other. While learning through tutorials, video calls, sharing screens and enabling learning software, help students make the most of their virtual learning experience.The major resources utilized include: Swayamprabha, Google Suite, Google Meet, Google Classroom, Zoom Meeting App, Whatsapp, YouTube, etc.

After classes teachers took Viva of different papers in interactive face to face mode with the students and submitted report to head of the department. Theory evaluation in this time also changed to open modes and teachers shared the question papers (more application based in nature) in stipulated time with students which was to be attempted by students at their convenience and then they sent back the answer sheets to respective teachers on electronic mailing address.

In the whole journey teachers encouraged students to be more sensitive for the self and surroundings. The mantra is to, Follow the safety norms, Stay home, be safe and healthy.

Following are some glimpses of the teaching-learning during Covid'19.

Which study is better online or offline?

Dr. K. P. Chaudhary,
Director, MSIT

As the trend toward online education intensifies, questions remain regarding the overall efficiency of online courses versus their in-class counterparts. Efficiency outcomes are defined in terms of (1)

quantitative scores achieved by the student at the end of the course, (2) the student's viewpoint of how much they learned in the course and (3) the student's level of satisfaction with the course.

Discussion

It isn't a secret anymore that the market of online education is growing fast all over the world and India isn't left behind.With more than one million registered learners, India is second biggest source of learners for platforms like Coursera. The e-learning market in India itself is estimated around $3 Billion and is expected to grow to $40 Billion. In fact, Indian students' enthusiasm towards online learning can be seen from the data released by Harvard-MIT about their online courses. This Person-Course De-Identified dataset contained 641,138 events, chronicling 476,532 students who have taken up to 13 unique courses from a variety of topics. According to which, Indians were the largest group of nationals registered in Harvard and MIT online courses only second to the USA.

Source: http://minimaxir.com/2014/07/online-class-charts/

Comparison of online versus offline learning is no doubt of substantial interest to educators and the focus of numerous studies. As preference for online learning increases, mostly due to the convenience and flexibility it offers students, universities find themselves increasing the number of online format courses to meet the growing demand. However, the question remains whether the delivery format of a course, i.e. online versus offline, impacts student performance, their satisfaction and learning. Many a priori studies report mixed results. We have found sufficient evidence to indicate that students taking the online course format are more efficient than their offline counterparts.

Rapidly growing Indian middle class has put more emphasis on good education which increases demands of higher educational degrees. This increase in demand for higher educational degrees from reputed institutions has made more and more students to appear for competitive entrance exams like CAT. With online tutoring, now India is becoming a leveled field for students from remote locations and limited resources to have same accessibility as students from metro cities. Online coaching centers such as Handakafunda bring talented educators from across nation to the doorstep of students. It is not a surprise at all that the global private tutoring market is projected to surpass $102.8 billion by 2018 for which India alone, has had a record growth of almost 35% in the last five-six years and is likely to touch more than $70 billion by 2020.

Choosing online or offline?

The main difference between **online** and **offline** learning is location. With **offline** learning, participants are required to travel to the training location, typically a lecture hall, college or classroom. With **online** learning, on the other hand, the training can be conducted from practically anywhere in the world.

Though **online** courses offer a great many benefits, they are not right for every student. ... Even so, this isn't quite the same as the social interaction you would have with other students in a physical **classroom** setting. Some students simply learn **better** in a collaborative setting than they do on their own.

Advantages and Disadvantages of Online Courses

1. Online courses are convenient.

The biggest advantage of an online course is that your classroom and instructor (theoretically) are available 24 hours a day, seven days a week. Your only excuse for missing class is not getting online! Otherwise, everything is available to you.

2. Online courses offer flexibility.

You can study any time you want. You can study with whomever you want. You can study wearing anything you want (or nothing if you prefer!) Online courses give you the flexibility to spend time with work, family, friends, significant others or any other activity you like

3. Online courses bring education right to your home.

Online students often find that their family, friends and/or boy-girl-friends get involved in the course. Oftentimes, a student will study with that special someone present. Children may take an interest in the online environment. Parents may look over the shoulder of an online student while they are surfing across

the web. In short, everyone in the household gets involved in learning. Having the support of your family and friends makes you more likely to succeed.

4. Online courses offer more individual attention.
Because you have a direct pipeline to the instructor via e-mail, you can get your questions answered directly. Many students aren't comfortable asking questions in class for fear of feeling stupid. The Internet (hopefully) eliminates that fear (as long as you feel comfortable with the instructor).

5. Online courses help you meet interesting people.
Many of us don't really take the time to get to know our fellow students, especially in large classes. We might be too busy or we're just plain shy. An online course provides an opportunity to get to know other students via bulletin boards, chat rooms and mailing lists. I've had students form study groups online, meeting at a local library or coffee shop

6. Online courses give you real world skills.
When you complete this course, you will be able to include e-mail and web browsing as technical skills on your resume. That gives you a definite advantage over someone who doesn't have these skills. Learning how to get information via the Internet opens up a world of possibilities for your personal and professional life

7. Online courses promote life-long learning.
Most of the time, most of what we learn in a course is forgotten within a week or two of the end of classes. Having that spark of interest and knowing how to find information online insures that what your learning is always available to you.

8. Online courses have financial benefits.
Consider the costs for child-care, pet care or any other kind of care that you need to provide while you are away from home. Consider the costs of missing work to make classes or not being eligible for a promotion because you can't attend classes to advance your educational level. These are very tangible benefits of having access to education at home

9. Online courses teach you to be self-disciplined.
Perhaps the greatest foe of online courses is procrastination. Most of us, instructors included, put off the things we need to do until the very last moment. When it comes to education, the last moment is the worst possible moment to learn. Sometimes that lesson is learned the hard way in the form of poor performance on an exam or assignment.

10. Online courses connect you to the global village.
No technological invention in the history of man has connected the people of the world like the Internet. While there is still a huge disparity between those who have access to the Internet and those who don't, the mere fact that any of us can communicate across the globe speaks to the importance of this medium.

Disadvantages of Online Courses

1. Online courses require more time than on-campus classes.
Believe it or not, you will spend more time studying and completing assignments in the online environment than you will in an on-campus course. How can that be? The online environment is text-based. To communicate with your instructor and other students, you must type messages, post responses and otherwise communicate using your fingers (i.e., through typing).

2. Online courses make it easier to procrastinate.
Just as there is a dark side to that controversial property known as the Force, there is a dark side to Internet-based courses. The dark side starts with procrastination. Procrastination is to a student what Darth Maul is to Qui Gon. Procrastination will chop you to bits in an online course. There is no one to tell you to get to class on time. There is no one reminding you that assignments are due or that exams are coming. There is no one to preach to you, beg with you, plead with you to stay on top of your coursework

3. Online courses require good time-management skills.
An Internet-based course demands that you develop personal time-management skills. As with most things, if you don't manage your time properly, you will find yourself buried beneath a seeming insurmountable mountain of coursework. Online courses require the self-discipline to set aside chunks of time to complete your studies

4. Online courses may create a sense of isolation.
In an online course, no one can hear you scream. And that causes discomfort for some online students. Studying alone with only the computer as your companion can be terrifying. There's no whispering in the back of the room, no wise remarks from the peanut gallery, no commanding presence at the front of the classroom pleading for everyone to listen.

5. Online courses allow you to be more independent.
In my opinion, it's a much better situation for the student. By the time a student enters a community college, they want to be independent. They don't want someone telling them what to do all the time. They want their freedom. (At least, that's how I was when I went to college.)

6. Online courses require you to be an active learner.
It's a sink or swim proposition and you can't have it both ways. If you desire to become a responsible, self-sufficient, independently minded citizen of this planet, then now's the time to start. Life is not a dress rehearsal. Get busy with it.

7. Online courses don't have an instructor hounding you to stay on task.
I also think it's an advantage for the instructor. I don't have to become the all-powerful Oz and threaten you with dire consequences if you don't do your work. I don't have to control you, manipulate you, scold you, act like a parent or babysitter to you. I can treat you like an adult with the respect that you deserve

8. Online courses give you more freedom, perhaps, more than you can handle!
This freedom can be dangerous if you don't learn how to handle it.

9. Online courses require that you find your own path to learning.
Personally, I think it is far better to let students find their own way. Instructors can be beacons, lighthouses of knowledge, so to speak, but we can't steer the ship. Hopefully, everyone makes it safely to harbor. Occasionally, someone shipwrecks. But in all cases, everyone learns, and I think that is important.

10. Online courses require you to be responsible for your own learning.
Only you are responsible for your learning. I can't force it on you. I can't make you study. I can share a little knowledge and experience, show you a few tools and hope you get it. The spark and desire to pursue your dreams must be yours.

So, in a philosophical sort of way, the real disadvantage to an Internet-based course is that you might not own up to it. You might not take responsibility for your studies and your goals. You might get way behind and never catch up.

Pros and Cons of Online Education

"An investment in knowledge pays the best result"

Dr. Suman Mann, Associate Professor, MSIT

The covid-19 pandemic has affected educational system worldwide, leading to the near-total closure of schools, colleges and universities. With implementation of lockdown in the Country, all regular classes have been stopped in between a running semester. But during this time of distress, education must go on. Therefore e-learning tool has been taken up as a mode of education and imparting training and knowledge sharing. Most of the teachers had no clarity on what tools and technologies to be used in the e platform. Few had earlier experience of running a MOOC.

Which form of education is the best? That is a million dollar question. At this time, it is abundantly clear that we ought to combine the virtues of both online (virtual) and offline (F2F) education. It appears that blended on flipped education can help to strike an optimal balance between e-education and traditional education. This will help perpetuate a healthy balance between hi-tech and hi-touch on e-education. This will also avoid harmful effect of addiction to information technology artifacts like smart phones, the internet and facebook.

Everything has its own pros and cons. The most relieving advantage the online mode offers is its super flexibility on timing and delivery with home comfort. Teachers are now on the driver's seat and delivering online lectures. The advantage and opportunity of the online course now felt by the masses. Availability of good quality network band width , laptops/ desktops are the main concerns and other associated problems that both teachers and students can face include increased pressure on their eyes due to prolonged screen view time and other occupational health issues like incorrect posture, back strain. Other factors are lacking self-discipline, lack of flexibility, lack of input from trainers, no peripheral benefits. Some of the day to day challenges faced by teachers are better coordination with all concerned, platform issues, some technical issues etc.

Online education quality must be improved and perceived as equal to face-to-face classroom based education with good security system. This will ensure recognition of online education at par with traditional education. Ultimately, getting credentials in any mode of education should become indispensable from one another.

A gift of knowledge can bring us to the top of our dreams. It leads us to the right path and gives us a chance to have a wonderful life. Only if you believe and work hard can you achieve anything.

"Purpose of the teaching is to create nation building capacities in student" by APJ Abdul Kalam

Nidhi Gupta, Asst. Prof. MSIT

Yes, today "online learning" is quickly becoming one of the most cost-effective ways to educate the students. Online system is successful for those students who attend coaching in odd times. I am strictly opposing this online system as a permanent method of teaching. It's always there that teacher teaches to teach student - what they need to know and encourage them why they need to know it and try to solve their emotional and educational queries. But in today's scenario the statement has changed - what they need to know and when they need to know it. It works on only one platform – giving and taking - where is the scope of connections and human values. Many free online lectures of IIT are already available on NPTEL or others platform since decades. Yes, this online platform is useful to some bright students but what about remaining large part of students. Certainly, this will not help. Moreover, these bright students also need one to one direct encouragement and discussions which help them to grow. Counselor says leave the child in house, he will learn his own. And certainly we see wonders that child learn the language and values at house. Same way, leave the student in class, he will learn so easily. As, when one student answer teacher's question in class, then another student easily learn this answer by only listening. As a teacher, we not only guide them during the course but also they are connected with us after the course also. There are many incidences but I will share few incidences which show that emotional connection certainly helps these students. During B.Tech (first year) - In one incidence, I was talking to a child who scored good marks in 12th board but showing poor result in Electrical subject. After the conversation I came to know that she couldn't get admission in Govt. Institute so his parent is regularly teasing her about money and irresponsibility. Then i came to know that she don't talk to her father because of fear and communication gap. I encourage and teach the importance of family to her regularly. This certainly helps her and can be seen in her results. During B.Tech (second year) - In one incidence, when I was proctor of

one class, student stop coming to institute, because he don't want to do B.Tech in electrical Engg , he wants to do course in physics. We called his helpless parent who was working as educationist in IGNO and told us that his child does not understand. I discussed this matter in class and asked his friends to call him in institute just once. Also, we made a team in department to encourage the student for showing the integration of electrical engineering and physics. During his course, our EEE department, try to clear and satisfy his query every time. During B.Tech (final year) - Second incidence I would like to narrate of brightest student whose father undergoes dialysis during seventh semester of his B.Tech course. His father is only the earning member of his house. A lot many problems he was facing at personal end. He was totally depressed and confused. He is trying for government job, meanwhile by constant guidance and counseling, he has his own center and earning good amount of money. I encourage him to teach unprivileged children also. And I totally believe he will definitely accomplish my dream. As lot many online lectures are already available. So, in last I would say connections with the children are must for human values and their growth which cannot be fulfilled by online lectures. It requires eye to eye connection. "Purpose of the teaching is to create nation building capacities in student" by APJ Abdul Kalam

---

" Towards an unconventional way of teaching "

Prof. (Dr.) Archana Balyan,
Professor, MSIT

In the 21st century, the shift to digitization of education has significantly transformed how the learning and teaching process is received and delivered. Digitization in education refers to the use of digital technology to teach students. The availability of internet has made on-line teaching and learning possible. Integration of technology in this digital era has created a new level of personalized learning.
This fresh approach of on-line learning is transforming and spreading learning opportunities for students irrespective of their location, time zone, background etc. In the wake of covid-19 pandemic, this approach is being used so far by teachers, educators and faculty of higher education institutes and universities to impart lessons to the students successfully, until the normalcy is restored. With the use of on-line platform, the faculty has been able to engage with all their students on-line for completing remaining portions and pending assignments for the current semester. This on line engagement has in- turn resulted in making the students journey ahead smoother and obtain best possible advantage of utilizing the time without any loss in academics. The importance of on-line learning platform has been understood and realized by the teaching fraternity as the continuity in learning process has been maintained only due to it, otherwise the learning would have come to halt. Hence, on-line learning methodology has proved to be an asset in education field in these testing times and circumstances.

For a teacher, effectiveness of the on-line format in educating students compared to traditional class room teaching is major concern, especially in higher studies. Also, the crux lies to examine the students learning and assessments of assignments, conducting on-line tests and monitoring their performance. It is observed that the effectiveness of learning can be increased when user friendly on-line tools are available to them for learning purpose. For example, we can use peer -wise; a recent on-line tool which enables students to write, share, answer, discuss and rate multiple choice questions (MCQs), conduct quizzes with minimal or almost nil input from the instructor. Using these technologies, the students are likely to have better learning outcomes and improved motivation for learning. The reasons could be more time available at their disposal which they can utilize for developing certain skill sets and enhancing their professional skills, undertaking internships, preparing for higher education etc. It is also seen that on-line medium of learning also instil a team spirit and bonding among themselves and increasing co-ordination amongst themselves.

After being a class room teacher throughout my career and also been using on-line platform very recently, I believe that on-line learning is equivalently an effective mode of teaching and learning process as is the

classroom teaching, if not better. The endeavour has been to impart lessons to the students without a corresponding loss of quality and effectiveness. One distinct and very important advantage of class room teaching is face-to-face interaction between faculty and the student which is limitation in on-line method of learning.

The on- line mode of learning has established itself in a very strong and effective way in the field of imparting education. Also, on line mode can be used for conducting various academic activities such as seminars, training, faculty development courses, workshops etc. successfully. On-line mode is an alternate mode of learning for students who are not able to physically attend the class room reaching for any reasons. I strongly believe that the students of this generation are very fortunate to have the option of on-line platform available to them and is a boon for student community. The students are highly benefitted from use of information technology in education sector. The shift to digitization of education is a significant transition in teaching learning process.

With the kind of reach out to the students, methodology of on-line learning is definitely an alternate method, but certainly not a superior method of learning as compared to traditional method of class room teaching and learning process. It cannot take away the essence of face-to-face learning. Digitization of education is a step forward in achieving the aim of "education for all" in our country.

मन की बात

डॉ. प्रोमिला डबास,
असि. प्रोफेसर, महराजा सूरजमल संस्थान

वैसे तो हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अक्सर मन की बात किया करते हैं जो कि बहुत सटीक, गहरी, तथ्य पूर्ण तथा प्रसांगिक होती है लेकिन इस कोरोना काल में जब मैंने अपनी मेल पर सूरज सुजान के संपादक श्री विद्यालंकार जी का यह मैसेज पढ़ा कि हम अपने विचार उनसे साझा करें तो तत्काल ही मन में एक ख्याल आया कि क्यों ना मैं भी अपने मन की बात इस माध्यम से आप सब तक पहुंचाऊं। जो मन की बात आजकल कक्षा कक्ष में नहीं हो पा रही, जो मन की बात आसपास अध्यापकों के बीच में नहीं हो पा रही, जो मन की बात हमारी निदेशक महोदय के सामने भी प्रस्तुत नहीं हो पा रही। तो यह मन की बात आज इसी विचार से मैं एक शिक्षक के नाते आप सबके सामने रखना चाहती हूं।

''मन'' वुड डोर है जो खुले आसमान में बिना डोर के उड़ती ही जाती है। मन को सुनना, समझना और किसी को समझाना बड़ा उलट–पुलट है। एक ही दिन में फिजिकल क्लासरूम से वर्चुअल क्लासरूम के एक्सपोर्ट बनना तो थोड़ा अटपटा लगता है। पर यह पक्का था की कोशिश की उम्मीद बहुत बड़ी थी। तो क्या था, जैसे ही समय आया मानो हमारा मन पहले से तैयारी करें बैठा था कि यह भी करके दिखाएंगे। तो कभी गूगल क्लासरूम, गूगल हैंग आउट, जूम, स्काइप, माइक्रोसॉफ्ट और वेबैक्स डाउनलोड और एक्सप्लोर किए जा रहे थे। हम सभी शिक्षकों को विभागाध्यक्ष एवं निदेशक महोदया डॉ. रचिता राणा से निर्देश मिले थे की तकनीकी माध्यम से अध्यापन पूर्ण किया जाए। फिर क्या था हम सब ने अपने घर से शिक्षण कार्य क्रियान्वित करना शुरू किया। अपने विषय की सह–शिक्षिका डॉ. मोनिका सिंह से समय–समय पर चर्चा हुई और नॉलेज एंड करिकुलम के पेपर के बचे हुए टॉपिक कैसे पढ़ाए जाए।

पहले चरण में हमने व्हाट्सएप ग्रुप से नोट्स शेयरिंग से काम शुरू किया। फिर ऑडियो रिकॉर्डिंग भेजने का निर्णय हुआ, 15 मिनट की ऑडियो रिकॉर्डिंग में सटीक ढंग से टॉपिक डिलीवरी पर सारा ध्यान केंद्रित करना था। इस 15 मिनट में लगभग एक सवा लगा क्योंकि पहली बार अपनी आवाज रिकॉर्डिंग से अपने स्टूडेंट्स को भेजनी थी, अपनी तसल्ली के बाद ही ऑडियो भेजी गई। इस पर अपने स्टूडेंट्स का फीडबैक सुनकर कुछ मनोबल भी बढ़ा। परंतु अपने महाराजा सूरजमल संस्थान के बड़े लंबे चौड़े, पोडियम से सजे, ब्लैक बोर्ड, स्मार्ट बोर्ड तथा बच्चों से परिपूर्ण कक्षा किस बदलते स्वरूप मैं वह मजा अभी भी ना था। काम थोड़ा चलने लगा था, या कहें धीरे–धीरे मन बनने लगा था, हमारा भी और पढ़ने वालों का भी।

अगले पड़ाव में इंटरएक्टिव क्लासरूम्स, फेस टू फेस मोड में क्लास लेना तय हुआ जिसके लिए चुने गए और पहली क्लास रूम पर रखी गई। विषय था टीचर इन द रोल ऑफ क्रिटिकल पेडगॉजी, टॉपिक भी बदलते कक्षा कक्ष का अपने आप में एक बेहतरीन उदाहरण था। फिर जब रूम पर बच्चों के साथ जुड़े तो जैसे ही पढ़ाना शुरू हुआ, उधर से सवाल आया मैडम अब क्या होगा, कैसे होगा, हमारे पेपर, हमारी डिग्री आदि आदि। तो लगा यह जो टॉपिक मैं पढ़ाने वाली हूं उससे जरूरी है मैं पहले अपने विद्यार्थियों की मनोदशा को समझ कर इनसे बात करके आगे बढ़ूं अन्यथा इस वर्चुअल कनेक्ट का कोई लाभ शिक्षण में ना होगा। फिर उनसे उनकी दिनचर्या, मनोदशा, घर परिवार, देश दशा कुछ कुछ चर्चाएं हुई। पता चला ज्यादा समय फोन में टीवी पर ही जा रहा है, कुछ अच्छा नहीं है, पता नहीं क्या होगा, क्या करें, क्या ना करें , कह भी नहीं पा रहे हैं बहुत निराशा महसूस होती है। इसी चर्चा के बीच मेरी कक्षा में किसी ने यही सवाल मुझे भी पूछ डाला। तो मैंने अपनी दिनचर्या को कुछ संक्षिप्त में बताते हुए यही कहा आप लोगों के लिए टॉपिक प्लानिंग, अपने बच्चों की ऑनलाइन क्लासेज और होमवर्क, किचन तथा अपने बच्चों को टीवी और फोन से दूर रखने के लिए कुछ छोटी–मोटी एक्टिविटीज जैसे कि छुटपुट पौधे लगाना के कामों में उनको व्यस्त रखना, व्यायाम कराने के लिए खुद उनके साथ लगना तथा रात में कोई भी किताब पढ़ना जरूरी कार्य की सूची में शामिल कर दिया है। जिससे कि हमारा मनोबल अभी बना रहे और समय का सदुपयोग हो। मन की बात कहूं तो जब फुर्सत के कुछ पल मिलते हैं तब लगता है निराशा बहुत है, और यह तेजी से फैलती है। पर आशा ही आसरा है। इसी आशा की कड़ी में ताली, थाली, दीया मोमबत्ती ने जज्बा भरा और आशा की एक किरण दिखाई। इसी के चलते कोरोना योद्धाओं की तरह अपने को हमने एक चींटी जैसा ही पर महायज्ञ का हिस्सा समझा कि हम डिजिटल लर्निंग से लर्निंग की खामियों को दूर करें।

डिजिटल लर्निंग की बात करें तो कुछ सामान्य बातें सामने आती हैं जिन्हें हम इस माध्यम से पढ़ाने की चुनौतियों के रूप में भी देख सकते हैं। पहला तो पूरी तैयारी करें चाहे पढ़ाने के टॉपिक की बात हो या फिर डिजिटल मीडियम से क्लास को व्यवस्था करने की। फिर जब अपनी डिजिटल क्लास शुरू कर चुके हैं तो कुछ रूल्स से टाइमिंग, क्लास एंट्री, रिलेटेड क्वेश्चन इन, मूल्यांकन आदि का वहां भी या कहे की सामान्य कक्षा से अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इंटरएक्टिव क्लासरूम किसी भी डिजिटल लर्निंग को उसके एरिया को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। क्लासरूम इंटरेक्शन पर बहुत अधिक गौर करने की जरूरत है। वीडियो, स्क्रीन शेयर आदि के समय उचित लाइटिंग, साउंड व्यवस्था पर ध्यान दें। टीचिंग लर्निंग प्रोसेस को दया देने के लिए के मूल्यांकन तक का कार्य डिजिटल लर्निंग मैं सम्मिलित किया जाना चाहिए।

महामारी का यह काल कालचक्र से अछूता नहीं है यह भी चला जाएगा, और बहुत सी चीजें हमें सिखा कर जाएगा। आज भारत में शिक्षण पद्धति बदलाव के दौर से गुजर रही है और शिक्षकों के सामने एक बड़ी चुनौती है। शिक्षक समाज का आईना है तो उन्हें आज और कल के साथ चलना होगा और समाज में एक नई ऊर्जा का संचार करना होगा। जय हिंद जय भारत।

वरिष्ठ पत्रकार श्री आनंद राणा प्रेस कांउसिल ऑफ इंडिया के सदस्य नियुक्त

वरिष्ठ पत्रकार श्री आनंद राणा को प्रेस कांउसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) का सदस्य नियुक्त किया गया है। नई दिल्ली स्थित सूचना भवन में पीसीआई के चेयरमैन एवं सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाद्यीश श्री चंद्रमौली कुमार प्रसाद की अध्यक्षता में गत 24 फरवरी को श्री राणा की नियुक्ति संबंधी प्रक्रिया को पूर्ण किया गया था। केंद्र सरकार ने श्री राणा की नियुक्ति को गजट ऑफ इंडिया में अधिसूचित कर दिया है। प्रेस कांउसिल ऑफ इंडिया यानी भारतीय प्रेस परिषद एक संवैधानिक स्वायत्तशासी संगठन है जो प्रमुख रूप से प्रेस की आजादी की रक्षा करने एवं उसकी जिम्मेदारियों को सुनिश्चित करने के दायित्व का निर्वहन करता है। अध्यक्ष पीसीआई के प्रमुख होते हैं, जिसे राज्यसभा के सभापति,

लोकसभा के अध्यक्ष एवं सदस्यों में चुना गया एक सदस्य मिलकर नामित करते हैं। पीसीआई के सदस्यों में पत्रकार बिरादरी के नुमाइंदों के अलावा तीन लोकसभा सदस्य, दो राज्यसभा सदस्य तथा एक–एक सदस्य बॉर कांउसिल ऑफ इंडिया, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा साहित्य अकादमी से होते हैं।

श्री राणा की नियुक्ति पर नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्टस (एनयूजे) और संबंद्ध राज्य ईकाईयों ने खुशी का इजहार किया है। इंडियन जर्नलिस्टस यूनियन, प्रेस एसोसियसन, वर्किंग न्यूज कैमरामेंस एसोसिएशन ने श्री राणा के पीसीआई का सदस्य बनने पर बधाई दी है। एनयूजे के अध्यक्ष रास विहारी, महासचिव प्रसन्ना मोहंती, इंडियन जर्नलिस्टस यूनियन के अध्यक्ष के. श्रीनिवास रेड्डी, महासचिव बलविंदर सिंह जम्मू, पीआईबी मान्यता प्राप्त पत्रकारों के संगठन–प्रेस एसोसियसन के अध्यक्ष जयशंकर गुप्त, महासचिव सी.के.नायक और वर्किंग न्यूज कैमरामेंस एसोसिएशन के अध्यक्ष एस. एन. सिन्हा, महासचिव सन्दीप शंकर ने आनंद राणा की नियुक्ति के बाद कहा कि इससे पत्रकार हितों की आवाज और बुलंद होगी। दिल्ली जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश थपलियाल और महासचिव के पी मलिक ने आनंद राणा के पीसीआई सदस्य नियुक्त होने पर एनयूजे, आईजेयू, प्रेस प्रेस एसोसिएशन और वर्किंग न्यूजकैमरामैन एसोसिएशन के सभी पदाधिकारियों का धन्यवाद किया है।

एनयूजे–आई के निवर्तमान अध्यक्ष श्री प्रज्ञानंद चौधरी (आनंद बाजार पत्रिका), पूर्व कोषाध्यक्ष सीमा किरण, डीजेए के पूर्व उपाध्यक्ष अशोक किंकर, उत्तर प्रदेश जर्नलिस्टस एसोसिएशन (उपजा) के अध्यक्ष रतन दीक्षित तथा महासचिव अशोक अग्निहोत्री (ताउ),जर्नलिस्टस एसोसियसन ऑफ राजस्थान (जार) के अध्यक्ष राकेश शर्मा तथा महासचिव राकेश सैनी, एनयूजे –आई केन्द्रीय कार्यालय सचिव मनमोहन लोहानी ने श्री राणा की नियुक्ति पर बधाई दी है।

दिल्ली देहात के किसान परिवार में जन्मे श्री आनंद राणा पिछले दो दशक से पत्रकारिता से जुड़े हैं। उत्तर–पश्चिमी दिल्ली के गांव कुतुबगढ निवासी श्री आनंद राणा सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था के आजीवन सदस्य हैं। श्री आनंद राणा महाराजा सूरजमल तकनीकी एवं फार्मेसी संस्थान के पूर्व छात्र रह चुके हैं। तत्पश्चात् उन्होंने पत्रकारिता एवं जनसंचार में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। श्री आनंद राणा ने दिल्ली से पत्रकारिता की शुरुआत की तथा आज वे पत्रकारिता के क्षेत्र में देश के नामी पत्रकारों में शुमार हैं। वे नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट्स इंडिया (एनयूजेआई) की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य हैं एवं पिछले कई वर्षों से संपादकीय प्रमुख के रूप में हरिभूमि समाचार पत्र के दिल्ली संस्करण की बागडोर संभाल रहे हैं। वे दिल्ली जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन (डीजेए) के पूर्व महासचिव रह चुके हैं और पत्रकारों से जुड़े मुद्दों पर संघर्षरत रहे हैं। श्री आनंद राणा पत्रकारिता क्षेत्र में सेवारत रहने के साथ–साथ समाज सेवा हेतु भी सदैव अग्रसर रहते हैं। वे यूनिटी फॉर डेवलपमेंट के अध्यक्ष हैं। यह संस्था दिल्ली देहात के गांव के विकास और समस्याओं के समाधान हेतु सक्रिय है। आज उनका पत्रकारिता जगत में एक बड़ा नाम है। एक वरिष्ठ और प्रतिष्ठित पत्रकार होने के बावजूद आपका विनम्र एवं मिलनसार व्यवहार हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है।

श्री आनंद राणा को प्रेस कांउसिल ऑफ इंडिया (पीसीआई) का सदस्य नियुक्त होने पर सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था की ओर से हार्दिक शुभकामनायें।

प्रेस एसोसिएशन ऑफ इंडिया में के.पी. मलिक ने बढ़ाया गौरव

भारतीय संसद एवं भारत सरकार के अन्य मंत्रालयों की 20 वर्षों से अधिक कार्यवाही को बहुत ही बारीकी से कवर कर के श्री के.पी. मलिक राष्ट्रीय स्तर के केंद्र सरकार से मान्यता रहे हैं। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में मान्यता प्राप्त पत्रकारों के सबसे बड़े संगठन 'प्रेस एसोसिएशन ऑफ इंडिया' (रजि.) 'दिल्ली पत्रकार संघ' एवं 'प्रेस क्लब ऑफ इंडिया' के सम्मानित पदो पर चुना जाना बड़े गौरव की बात मानी जाती है। नई दिल्ली में पत्रकारिता के हिंद महासागर में कलमकारों की जमात में अलग पहचान बना कर निर्वाचित होना हमारे जाट समाज के लिए गर्व की बात है। हम उनके उज्जवल भविष्य की कामना करते है। उत्तर प्रदेश के शामली जिले के छोटे से गाँव आदमपुर में संपन्न किसान परिवार में जन्मे श्री के.पी. मलिक ने हिंदुस्तान भर में शामली जिले और समाज का

गौरव बढ़ाने का काम किया है। शामली और मेरठ से पढ़ाई पूरी करने के बाद दिल्ली में दूरदर्शन, बीबीसी, जी न्यूज, सहारा समय और हिंदुस्तान टाइम्स जैसे बड़े संस्थानों में रहकर पत्रकारिता के पायदान पर चढ़ते चले गए मलिक आज देश के सबसे बड़े और प्रतिष्ठित हिंदी समाचार पत्र दैनिक भास्कर में उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड संस्करणों में 'राजनीतिक संपादक' के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

पत्रकारिता जगत में जितना बड़ा है, वे उतने ही विनम्र, सादगी पसंद और सुलझे हुए व्यक्तित्व के धनी होने के साथ–साथ पत्रकारिता जगत के जाने–माने हस्ताक्षर हैं। मलिक आज पत्रकारिता जगत में एक बड़ा नाम है। आज एक वरिष्ठ और प्रतिष्ठित पत्रकार होने के बावजूद आपका मिलनसार व्यक्तित्व हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करता है। हिंदी प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में 28 साल का आपका लंबा अनुभव देश को एक नई दिशा प्रदान कर रहा है। आपकी लेखन शैली और खबरें ऐसी हैं कि जिसने आपको पढ़ लिया, वह आपके लेखों और खबरों को बिना पढ़े नहीं रह सकता। आपकी दूरगामी सोच और पैनी नजर देश की हर स्थिति–परिस्थिति का न केवल सटीक आकलन करने में सक्षम है, बल्कि घटनाओं का सटीक पूर्वानुमान कोई आपसे सीखे। वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से लेकर देश के कई प्रधानमंत्रियों की बैठकों, वक्तव्यों की कवरेज आपने की है। संसद में लोकसभा–राज्यसभा सत्रों की कवरेज भी आप करते आ रहे हैं। आप भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत संवाददाता श्रेणी के तहत केंद्र सरकार से मान्यता प्राप्त पत्रकार हैं। बड़ी बात यह है कि बड़े–बड़े मंत्रियों–ओहदेदारों से संपर्क और अच्छे संबंधों के बावजूद आपने न तो कभी इसका लाभ उठाना चाहा और न ही अपनी ईमानदारी पर कोई आँच आने दी। आज के दौर में हिन्दी पत्रकारिता के गिरते स्तर पर कोई भी संस्थान या पत्रकार गंभीर नहीं हैं! केवल तथाकथित पत्रकारों, मीडिया संस्थानों और संगठनों की तादाद बढ़ती जा रही है। दिल्ली में जितने न्यूज पेपर, पोर्टल और चैनल हैं, इतने शायद दुनिया के किसी भी राष्ट्र में न हों। यह अच्छी बात है, लेकिन पत्रकार, संस्थान और संगठन बढ़ने के साथ पत्रकारिता के स्तर में लगातार गिरावट आ रही है। ऐसे में सबके मन में एक सवाल जरूर उठता है कि इसको सुधारने के लिए कौन आगे आएगा? तब हम गर्व से कह सकते हैं कि अभी के. पी. मलिक जैसे पत्रकार हैं, मीडिया में सुधार की इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी के लिए। इन्होंने यह जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी के साथ निभाई भी है और निभा भी रहे हैं। यही वजह है कि जमींदार किसान परिवार में जन्मे मलिक जी आज भी गरीबों और किसानों के मुद्दे सरकार और समाज के सामने उठाने रहते हैं। आपकी कलम में आज भी वही धार है, जो एक सच्चे और देशहित में काम करने वाले पत्रकार की कलम में होनी चाहिए।

आपने न केवल मीडिया में कई बदलते दौर देखे हैं, बल्कि कई ऐसी साहसभरी कवरेज भी की हैं, जिनके बारे में सुनकर आज भी रूह काँप उठती है। इसका एक उदाहरण है 13 दिसंबर, 2001 को संसद पर आतंकी हमले की आपके द्वारा की गई लाइव कवरेज। आपने देशभर में होने वाले शिखर सम्मेलनों की कवरेज भी की है। प्रमुख राजनीतिक और अन्य घटनाओं को कवर करने के लिए देशभर में यात्राएं की हैं। इसके अलावा अनेक प्रतिष्ठित लोगों के साक्षात्कार करने का गौरव भी आपको प्राप्त है। मलिक की एक और बड़ी खूबी यह है कि इन्होंने युवा पत्रकारों की हमेशा मदद की हैय उन्हें आगे बढ़ाया है। आज आपके द्वारा मार्गदर्शन पा चुके अनेक युवा पत्रकार कई प्रतिष्ठित संस्थानों में अच्छे ओहदों पर हैं।

आज हमें अपने संस्थान सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था की ओर से ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तित्व और कर्मठ व ईमानदार पत्रकार के. पी. मलिक को सम्मान देते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

शोक संदेश

अत्यंत दुःख के साथ सूचित किया जाता हैं कि सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था के आजीवन सदस्य श्री ब्रह्मानन्द डबास, सुपुत्र स्वर्गीय श्री जागेराम डबास, निवासी 12/53, वैस्ट पंजाबी बाग दिल्ली–26 का निधन 1 मार्च 2020 को हो गया। स्व. श्री ब्रह्मानन्द डबास जी एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। वे दिल्ली कालेज ऑफ इंजिनियरिंग से मैकेनिकल में बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग करके हिन्दुस्तान इन्सैक्टीसाइडस लिमिटेड में सेवारत होकर मैनेजिंग डायरेक्टर बने। उन्होंने केमिकल इंजिनियरिंग में एमबीए किया। सेवानिवृत्त होने पर वे हरियाणा शक्ति एजूकेशन सोसायटी के चेयरमैन रहे। उनके निधन पर सूरजमल स्मारक शिक्षा संस्था के सभी सदस्य परिवार के साथ संवेदना प्रकट करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें तथा दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

The river CAM and Bridge Campus - Cambridge University

RNI No.: 28589/75
DL(W) 10\2080\2018-2020
No. U(E) 15\2018-2020

बैशाख शुक्लपक्ष की पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा) को रक्तवर्ण चन्द्रमा